(घ) इन वर्षों में खाद्य निगम को कितना लाभ अथवा हानि हुई ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अन्ना-साहिब शिन्दे) : (क) से (ग). भारतीय खाद्य निगम ने 1964–65 और 1965–66 में राजस्थान में कोई खाद्यान्न नहीं खरीदे थे। खरीदारी केवल 1966–67 में की गयी थी। एक विवरण जिसमें राजस्थान में विभिन्न प्रकार के खरीदे गये खाद्यान्नों की मात्रा तथा वे किस भाव पर खरीदे तथा बेचे गये थे, सम्बन्धी सूचना दी गयी है जो सभा पटल पर रखी गई है। [पुस्तकालय में रखा गया। देखिये संख्या LT—1090/67]

(घ) राजस्थान में निगम द्वारा विभिन्न प्रकार के खरीदे गये खाद्यान्नों की कुल 47,351 मीटरी टन की मात्रा में से 33,838 मीटरी टन की मात्रा का उपयोग राजस्थान में हुआ था और शेष 13,513 मीटरी टन की मात्रा जिसमें 8,122 मीटरी टन चना और 5,391 मीटरी टन चने की दाल थी, को राजस्थान से बाहर भेजा गया था।

(ङ) खाद्य निगम ने अन्य राज्यों में चना और चने की दाल को बोरी की कीमत सहित भेजने के स्टेशन पर रेल तक निःशुल्क आधार पर क्रमशः 73 42 रुपये प्रति क्विंटल और 75 87 रुपये प्रति क्विंटल की औसत दर पर बेचा था।

(च) 1966–67 के लेखों का अभी भी संकलन हो रहा है और लाभ तथा हानि के लेखों को अन्तिम रूप नहीं दिया गया है।

दिल्ली में कृषि भूमि का अर्जन

5985. श्री राम सेवक यादव : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र में खेती वाली भूमि का समय-समय पर अन्य प्रयोजनों के लिये अर्जन किया जाता रहा है;

(ख) यदि हां, तो ऐसी कितने एकड़ भूमि अभी तक अर्जित की गई है तथा वह किन प्रयोजनों के लिये अर्जित की गई है ;

(ग) क्या सरकार का विचार ऐसी और ऐसी और भूमि अर्जित करने का है ;

(घ) यदि हां, तो कितने एकड़ भूमि अर्जित करने का विचार है तथा यह भूमि किस उद्देश्य के लिये अर्जित की जा रही है ;

(ङ) देश की गम्भीर खाद्य स्थिति को देखते हुए क्या मकानों के निर्माण तथा अन्य प्रयोजनों के लिये खेती वाली भूमि को अर्जित करना उचित समझा गया है और

(च) यदि नहीं, तो क्या ऐसी और भूमि को अर्जित करना तुरन्त बन्द कर देने का सरकार का विचार है ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अन्ना-साहिब शिन्दे) (क) से (च) एक विवरण सभा पटल पर रखा गया है [पुस्तकालय में रखा गया। देखिये संख्या LT—1091/67]

Foodgrains production in Haryana

5986. **Shri Ram Kishan Gupta:** Will the Minister of Food and Agriculture be pleased to state

(a) whether Government's attention has been drawn to the fac. that while food production in the State of Haryana in 1966-67 has risen by at least 33 per cent over the previous year's production, the foodgrains in the State markets have been scarce and the prices higher than the previous year;

(b) if so, the comparative figures for these two years in respect of production and prevalent prices of each item; and

(c) whether Government have probed into the anomalous food